राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

संख्या–05/2025

प्रेस–विज्ञप्ति

भारतीय संस्कृति ज्ञान और प्रज्ञा की संस्कृति है–राज्यपाल

पटना 12 जनवरी, 2025 :– माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खां ने राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ, कंकड़बाग, पटना में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि भारत की संस्कृति दुनिया की अकेली संस्कृति है जिसे ज्ञान और प्रज्ञा की संस्कृति कहा गया है।

उन्होंने कहा कि 9वीं और 10वीं सदी में जब यूरोप में पुनर्जागरण की प्रक्रिया प्रारंभिक अवस्था में थी तब वह समय मध्य एशिया का स्वर्णिम काल था। उस समय के अरब के इतिहासकारों के अनुसार दुनिया में पाँच बड़ी सभ्यताएँ थी, जिनमें ईरान की सभ्यता वैभव के लिए, तुर्की सभ्यता बहादुरी के लिए, चीन की सभ्यता कौशल और शासकों के प्रति वफादारी के लिए, रोम की सभ्यता सुंदरता और महिलाओं के प्रति उदारता के लिए तथा भारत की सभ्यता ज्ञान और प्रज्ञा के संवर्धन के लिए जानी जाती रही हैं।

राज्यपाल ने कहा कि भारत दुनिया की अकेली संस्कृति है जिसकी निरंतरता बनी हुई है। आज से पाँच हजार वर्ष पहले भारतवासियों को ऊर्जा प्रदान करने वाले आदर्श और मूल्यों आज भी हमारे लिए उतना ही महत्वपूर्ण हैं। यह हमारी संस्कृति का अनूठापन है। विश्व की अनेक पुरानी संस्कृतियों का नाता आज की संस्कृति से टूट चुका है, किन्तु भारत में ऐसा नहीं हुआ। भारत की संस्कृति चिर पुरातन होते हुए भी आत्मा की तरह नित्य नूतन है।

उन्होंने कहा कि आज से हजार–बारह सौ साल पहले आदि शंकराचार्य ने भारत की आत्मा को जगाया था और पूरे देश में सांस्कृतिक और आध्यात्मिक एकता का भाव पैदा किया था। आधुनिक काल में यही कार्य स्वामी विवेकानंद ने किया। लंबे समय से विदेशी शासन के तहत रहने के कारण हममें अपनी संस्कृति के आदर्शों और मूल्यों से दूरी पैदा हो गई थी और हमारे भीतर हीन भावना उत्पन्न हो गई थी, जिसे उन्होंने दूर करने का प्रयास किया।

आगे पृष्ठ....2 पर

राज्यपाल ने कहा कि उपनिषद के अनुसार तप का अभिप्राय ज्ञान अर्जित करना और उसे दूसरे के साथ साझा करना है। उन्होंने कहा कि स्वामी रंगनाथनंद के अनुसार ऐसा न करने के कारण ही समाज की आत्मरक्षा की शक्ति कम हो गई और यह कमजोर हो गया।

राज्यपाल ने कहा कि 'विश्वगुरू' कोई उपाधि नहीं, बल्कि एक भूमिका है। विश्वगुरू का अभिप्राय है कि भारत ज्ञान का एक ऐसा केन्द्र होगा जहाँ दूसरे देशों के विद्यार्थी अपनी सभ्यता और संस्कृति का अध्ययन करने के लिए यहाँ आएंगे। हमारे यहाँ ऐसे शिक्षक होंगे जिनके भीतर सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया की संस्कृति को पढ़ाने की योग्यता, क्षमता और दक्षता होगी। हमारे ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व इसकी कल्पना की थी। ऐसा बनने की महत्वाकांक्षा हममें होनी ही चाहिए। इसे पूरा करने के लिए जी तोड़ परिश्रम करने की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति दुनिया की अकेली संस्कृति है जो जन्म पर आधारित बुनियादों यथा–रंग, जाति, सम्प्रदाय अथवा अन्य पूर्वाग्रहों से नहीं, बल्कि आत्मा से परिभाषित होती है। दुनिया के अनेक लोकतांत्रिक देशों में सदियों के संघर्ष के बाद महिलाओं को मताधिकार प्राप्त हुआ, जबकि भारत में आजादी प्राप्त होने के साथ ही उन्हें यह अधिकार मिला। इसका आधार आत्मा रहा है। आत्मा न स्त्रीलिंग है, न पुलिंग। यह सब में विद्यमान है, इसलिए कोई भेदभाव की बात नहीं है। यह भारत की संस्कृति है जो युवाओं के जरिये नूतन बनती है।

उन्होंने कहा कि युवाओं को अपने सांस्कृतिक आदर्शों और मूल्यों की जानकारी होनी चाहिए तभी उनका आचरण उनसे प्रेरित होगा। उन्होंने कहा कि विवेकानंद के अनुसार ज्ञान का उद्देश्य अपने भीतर ऐसी क्षमता पैदा करना है कि हम सामने नजर आनेवाली विविधताओं के बीच छिपी हुई एकता का दर्शन कर सकें।

कार्यक्रम को अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ, बिहार के राज्य प्रमुख श्री मनीष कुमार ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ, पटना के प्रभारी श्री अरविन्द कुमार, उप क्षेत्र प्रभारी श्री लाल बाबू, संस्था के पदाधिकारीगण, बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएँ एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

.....